International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 9 Issue 5, Sept-Oct, 2021, Impact Factor: 7.326

बदलते वैश्विक समाज में संगीत के आधुनिक प्रवृतियां – एक अध्ययन

डॉ0 हेमराज

सहायक आचार्य कण्ठ संगीत, राजीव गांधी राजकीय महाविद्यालय चौड़ा मैदान, शिमला (हि0प्र0)

सार संक्षेप –

आज के समय में जब विश्व के सभी देश बढ़ते हुए आधुनिक संसाधनों के कारण एक वैश्विक *समाज का अभिन्न अंग बनते जा रहे हैं या बन चुके हैं। जिस वजह से समाज के हर पहलू में* नए से नए तौर–तरीकों का समावेश भी होता जा रहा है फिर वह चाहे आधुनिक करण की दृष्टि से हो या नई संस्कृतिकरण की दृष्टि से। ऐसे में यदि विश्व में हम जाने जाते हैं, तो अपनी भारतीय संस्कृति व परंपराओं के लिए, जिनमें शास्त्रीय संगीत का प्रमुख स्थान है। बदलते वैश्विक परिवेश में संगीत में अनेकानेक प्रवृतियां उभर कर सामने आई हैं जिनसे के संगीत को सुरक्षित संवर्धित वह व्यवसायिक रूप से अपनाने में मदद मिली है। अतः संगीत की आधुनिक प्रवृत्तियों के समुचित अध्ययन के लिए भारतीय संगीत का प्राचीन समय से लेकर आधुनिक समय तक उसके उत्तरोत्तर विकास क्रम का अवलोकन करना अनिवार्य है।

बीज शब्द : वैश्विक समाज, संगीत प्रवृतियां, गुरू शिष्य परम्परा, संगीत शास्त्र, दूरस्थ शिक्षण, इवैन्ट मैनेजर, ध्वनि मुद्रण, वैबनार,संगीत ज्योतिष, योग, संगीत चिकित्सा।

भूमिका

बदलते वैश्विक परिवेश में संगीत में अनेकानेक प्रवृतियां उभर कर सामने आई हैं जिनसे के संगीत को सुरक्षित संवर्धित वह व्यवसायिक रूप से अपनाने में मदद मिली रही है। ऐसे में जब विश्व के सभी देश बढ़ते हुए आधुनिक संसाधनों के कारण एक वैश्विक *समाज का अभिन्न अंग बनते जा रहे हैं या बन चुके हैं। समाज के हर पहलू में* नित नए से नए तौर–तरीकों का समावेश होता जा रहा है फिर वह चाहे फिर आधुनिक करण की दृष्टि से हो या फिर नई संस्कृतिकरण की दृष्टि से। अतः संगीत की आधुनिक प्रवृत्तियों के समुचित अध्ययन के लिए भारतीय संगीत का प्राचीन समय से लेकर आधुनिक समय तक उसके उत्तरोत्तर विकास क्रम का अवलोकन करना अनिवार्य है। क्योंकि क्रियात्मक कला होने के कारण यह विद्या सदैव गुरु आश्रित अर्थात गुरु विद्या रही है। जो अपन विभिन्न स्तरों से संप्रदाय, वाणीयों, घरानां के माध्यम से गुरुकुल आश्रमों, राजाश्रयों से होती हुई संस्थागत शिक्षण की ओर उन्मुख हुई और विद्यालय, महाविद्यालय व विश्वविद्यालयों में एक विषय के रूप में स्थापित हुए। समय के निरंतर बदलते स्वरूप से संगीत में नए–नए अनुसंधान, मौलिक चिंतन और वैज्ञानिकता का समावेश हुआ। जिससे घरानेदार गायकी व परंपरा पर भी अपना एक विशिष्ट प्रभाव पड़ा। जो घरानागत गायकी मात्र अपने एक निश्चित दायरे तक सीमित हो चुकी थी। उसे उस दायरे से दोष मुक्त कर शास्त्रीय, ऐतिहासिक, साहित्यक, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक चिंतन के साथ सर्वसुलभ बनाने के लिए श्रद्धेय विष्णु द्वय का महान योगदान रहा। जिन्होंने संगीत के स्वरूप को शिक्षण संस्थानों में सर्वग्राही बनाया। जिसमें गुरु शिष्य परंपरा के आधारभूत तत्व को समाविष्ट कर उसके संरक्षण और संवर्धन का बीड़ा उठाया। सन 1886 में बड़ौदा में स्टेट म्यूजिक स्कूल खुला। 1901में गंधर्व महाविद्यालय की स्थापना हुई। इन संगीत के विद्यालयों ने प्राचीन गुरुकुल परंपरा प्रणाली और आधुनिक संस्थागत शिक्षण प्रणाली का अद्भुत समन्वय सामने आया जिसमें

संगीत के सर्व सुलभता निश्चित करने के लिए नोटेशन पद्धति द्वारा घरानेगत बंदिशों का तथा शास्त्रीय चर्चा के आधार पर सारगर्भित पुिस्तकों का लेखन किया गया। जो आगे चलकर इन विद्वानों का एक विशेष योगदान के रूप में उभरी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 1952–53 में संगीत को अन्य विषयों के साथ साथ एक विषय के रूप में 'माध्यमिक शिक्षा आयोग' की सिफारिश पर शामिल किया गया। धीरे–धीरे संगीत अपनी महता के कारण माध्यमिक शिक्षा से निकलकर उच्चतर माध्यमिक, स्नातक, स्नातकोत्तर व पीएच0डी0 उपाधि के रूप में विश्वविद्यालयों में प्रतिष्ठित हुआ।

वैज्ञानिक आविष्कारों ने समाज के प्रत्येक पल पक्ष वह क्रिया को प्रभावित किया है जिससे संगीत का क्षेत्र भी अछूता नहीं है। फलस्वरुप संगीत के प्रत्येक क्षेत्र में नवीन प्रौद्योगिकी के प्रयोग से विभिन्न विभिन्न प्रवृत्तियों का पदार्पण हुआ है और निरंतर नई से नइ प्रवृतियां पनप रही हैं जिसमें से कुछ प्रवृतियां निम्न प्रकार से हैं।

संगीत में आधुनिक नवीन प्रवृतियां :– आज का दौर तकनीक के दौर के रूप में जाना जाता है जहां नवीन प्राद्यौगिकी के विकास के कारण संगीत में नित नए प्रयोग हो रहे हैं चाहे वह किसी भी संदर्भ में क्यों ना हो उदाहरण के लिए संगीत शिक्षण के अतिरिक्त आज पुराने वाद्ययों के साथ प्रयोगो से नये नये वाद्य तैयार करना। फिल्म संगीत जो आज एक अलग से व्यवसायिक क्षेत्र बन चुका है, के लिए संगीत की धुन से लेकर रिकॉर्डिंग तक अनेक चरणों में व्यवसाय का क्षेत्र बन चुका है अर्थात संगीत के हर क्षेत्र में दिन प्रतिदिन नवीन प्रवृतियां पनप रहे हैं जिनमें से कुछ मुख्य प्रवृतियां निम्न प्रकार से हैं।

1संगीत शिक्षण के क्षेत्र में नवीन प्रवृतियां : – आज नवीन प्राद्यौगिकी के कारण संगीत शिक्षण के क्षेत्र में व्यापक प्रयोग हो रहें हैं, फलस्वरूप संगीत के शिक्षण में अनेक प्रवृतियां उभर कर सामने आई हैं। जिनमें से प्रमुख निम्न प्रकार से हैं –

गुरु शिष्य परंपरा – संगीत शिक्षण प्रवृत्तियों में प्रमुख रूप से गुरु शिष्य परंपरा का विशेष महत्व रहा है। जो अपने घरानेगत विशेषताओं के संदर्भ में अपन शिष्यों को शिक्षण प्रदान करते ह और एक कलाकार के रूप में स्थापित होने को दृष्टि से अपना शिक्षण प्रदान करते ह। आज ऐसे अनेक गुरुकुल गुरू शिष्य परंपरा के संदर्भ में शिक्षण संस्थान स्थापित हो चुके हैं। जहां घरान विशेष के गुरु अपने अपने घराने की शिक्षा की तालीम देते हैं, उदाहरण के लिए आई0टी0सी0 संगीत रिसर्च अकैडमी कोलकाता, गंगूबाई हंगल रिसर्च इंस्टीट्यूट पुणे, ध्रुपद केंद्र भोपाल इत्यादि।

शिक्षक शिक्षार्थी :– संगीत शिक्षण की इस प्रवृत्ति के अंतर्गत वे शिक्षक व शिक्षार्थी हैं जो संस्थागत शिक्षण से शिक्षित हो, विद्यालय महाविद्यालय व विश्वविद्यालयों में सीखने सिखाने का कार्य कर रहे हैं और सरकारी, गैर सरकारी कर्मचारियों के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

दूरस्थ शिक्षण प्रवृत्ति :– संगीत शिक्षण की इस प्रवृत्ति की ओर वे लोग उन्मुख हैं जो नियमित रूप से विद्यालय, महाविद्यालय, महाविद्यालयों में शिक्षण प्राप्त नहीं कर पाते हैं। ऐसे विद्यार्थियों के लिए अनेक विश्वविद्यालय दूरस्थ शिक्षण केंद्र स्थापित कर अध्ययन की दृष्टि से जोड़ा जाता है। जिनमें इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय तथा यूजीसी द्वारा शैक्षणिक टीवी चैनलों के माध्यम से संगीत शिक्षण दिया जाता है।

ऑनलाइन शिक्षण :– आज के आधुनिक समय में अनेक शिक्षार्थी ऐसे हैं, जो अपने पसंदीदा कलाकार या शिक्षक से आमने सामन तो शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते। किंतु वे अनुरोध पर विशेष फीस या शुल्क अदा कर अनेकानेक वेब एप्स जैसे स्काईप, ज्म, गूगल मीट इत्यादि एप्स के माध्यम से घर बैठे संगीत शिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

वास्तविकता बोध संगीत कक्षाएं : – आज के समय में ऐसी संगीत कक्षाएं बनाई जा रही हैं जिन्हें वर्चुअल क्लासरूम कहा जाता है अर्थात जिनमें वास्तविक संगीत कक्षाओं का बोध हो। ऐसे कक्षाओं का इंटरनेट क माध्यम से संचालन किया जाता है और विषय गत शिक्षा दी जाती है।

2 व्यवसायिक प्रवृतियां – नवीन प्राद्यौगिकी के कारण संगीत शिक्षण के क्षेत्र में व्यापक प्रयोग हो रहें हैं, फलस्वरूप अनेक प्रकार की व्यावसयिक प्रवृतियां उभर कर सामने आई हैं। जिनमें से प्रमुख निम्न प्रकार से हैं –

क्लाकार, मंच प्रदर्शक गायक वादक नर्तक वह संगतकार :– व्यवसायिक प्रवृत्तियों में मंच प्रदर्शन के संदर्भ में कलाकार/मंच प्रदर्शक की मुख्य भूमिका है जो गायक वादक नर्तक व संगतकार के रूप में स्थापित ह, जो अपनी कला के प्रदर्शन के पारश्रमिक रूप में अपनी व्यावसायिकता को संजोते हैं। आज के समय में गायन की विभिन्न शैलियों और वाद्य यंत्रों के वादन के क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावनाएं हैं। यही नहीं कलाकार दूसरे व्यवसाय में होते हुए भी फ्रीलांसर के रूप में संगीत के क्षेत्र में अपना नाम व सम्मान प्राप्त करते हुए धनार्जन कर रहे हैं।

शिक्षक व अनुदेशक :–एक शिक्षक के रूप में व्यावसायिक प्रवृत्ति अपनाने वाले अनेक संदर्भों में इस प्रवृत्ति को चुन रहे हैं, वह फिर चाहे विद्यालय, चाहे महाविद्यालय, चाहे विश्वविद्यालय में शिक्षण हो या अपनी व्यक्तिगत एकेडमी संचालित कर या टयूशन कर। संस्थागत शिक्षण के प्रचार प्रसार के कारण एक शिक्षक व अनुदेशक के रूप में इस व्यवसायिक प्रवृत्ति की अपार संभावनाओं के कारण आज अधिकांश लोग इस प्रवृत्ति की ओर उन्मुख ह।

वाद्य निर्मिती, मरम्मत व रखरखाव हेतु व्यवसायिक प्रवृतियां :– संगीत की तीनों शाखाओं गायन वादन नृत्य के प्रदर्शन में वाद्ययों व वाद्य निर्माण कताओं की प्रमुख भूमिका है। आज अनेक अनेक कंपनियां गायक वादको की आवश्यकता अनुसार उपयुक्त साउंड क्वालिटी आधारित वाद्यों का निर्माण कर व्यवसायिक प्रवृत्तियों को पुष्ट कर रही हैं। वे अपने वाद्यों मात्र देश में ही नहीं अपितु विदेशों को भी निर्यात कर रहे हैं। जो अपनी गुणवत्ता युक्त 'ब्रांड नेम' से पहचाने जाते हैं। वो फिर चाहे जालंधर के 'गुरुदयाल एंड सन्स' हों या दिल्ली के 'करतार चंद' या रीखी राम हां या कोलकाता के 'पॉल एंड कम्पनी' इत्यादि। जितना व्यापक क्षेत्र नवीन वाद्यों की निर्मिती व पाश्चात्य वाद्यों के आधार पर नवीन वाद्य बनाने का है, उतना ही अधिक वाद्यों के रखरखाव व मरम्मत का ह। जिस से प्रेरित हो आज अनेकानेक शहर कस्बों में वाद्य मरम्मत के दुकाने हैं।

संगीत वाद्य यंत्रों के ऑनलाइन खरीद बेच :– आज संगीत से संबंधित अनेक वाद्य यंत्रों की ऑनलाइन खरीदारी व बेचा जाता है जिससे निर्माता और विक्रेता तथा खरीददार को अपनी पसंद के वादियों का अपने बजट के अनुसार खरीदने की सुविधाएं प्राप्त हो रही हैं।

इवेंट मैनेजर :– व्यवसायिक प्रवृत्ति प्रवृत्ति के संदर्भ में इवंट मैनेजर अथात कार्यक्रम प्रबन्धक एक ऐसी व्यावसायिक प्रवृत्ति है जो अनेकानेक सामाजिक अवसरों व कार्यक्रमों में जो लोग कुशल प्रबधन में निपुण हैं वे खुद गा बजाकर नहीं अपितु कलाकारों के प्रबंधन कार्यक्रम प्रबंधन से अनेका अनेक आयोजित कार्यक्रमों का प्रबंधन कर धन अजन करते हैं यह फिर चाहे शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम हो या सुगम या लोक संगीत के या फ्यूजन या वेस्टर्न पाश्चात्य संगीत के।

चित्रपट संगीत :– चित्रपट अर्थात फिल्म संगीत वर्षों से अनेकानेक गायक वादक संगीतकार और गीतकार और लेखक संगीत निर्देशकों रिकॉर्डिंग आर्टिस्ट कलाकारों व कलाकारों को व्यवसाय के रूप में अवसर देता है। इस संगीत के माध्यम से शास्त्रीय संगीत के कलाकार सुगम, लोक संगीत भक्ति संगीत, फ्यूजन, पाश्चात्य संगीत के प्रति रुचि बढ़ी है और कलाकारों को व्यवसाय के रूप मं अवसर भी बढ हैं ।

फ्यूजन म्यूजिक :– पाश्चात्य का यह पुराना ढंग भारत में पिछले कुछ दशकों से सुनाई दे रहा है जिसमें अलग–अलग वाद्यों को लेकर प्रयोग किए जाते हैं। जिनका भारत में सर्वप्रथम सफल प्रयोग पंडित रविशंकर, उस्ताद अली अकबर खान साहब व पंडित बृजभूषण काबरा जी की तिकड़ी ने किया। जो अन्य देश के संगीत के संदर्भ में किया जा रहा है किंतु आज यह फ्यूजन का रूप हर प्रकार के फ्यूजन रूप में आज फल फूल रहा है। अनेका अनेक कार्यक्रम इस संदर्भ में आज प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

ध्वनि मुद्रण :– संगीत में नवीन तकनीकों के कारण हम पूराने कलाकारोंकी आवाज़ को संजो पायें हैं। नवीन वरूवसाय की प्रवृतियों के अन्तर्गत इससंदर्भ में पिछले दस वर्षों में अत्याधिक प्रयोग व प्रतिफल प्राप्त हुए हैं।जिसके कारएा अनेक प्रवृतियां उभर कर सामने आई हैं। इसमें स्टुडियो, रिकार्डिंग, रिकाडिस्ट, संगीत संयोजक, निर्देशक, सम्पादक जैरी प्रवृतियां पुष्ट हुई। सुम व फिल्म संगीतमें उवं व्यवसायिक संगीत के संदर्भ में यह आज की युवा पीढ़ी का पसंदीदा क्षेत्र है।

कोरियोग्राफर व विडियो ग्राफर :– आज के संदर्भ में कोरियोग्राफर व विडियो ग्राफर व्यवसायिक संगीत व फिल्म संगीत से जुड़ी एक विशंष प्रवृति है जिससे जुड़कर अनेक कलाकार धन व सम्मान अर्जित कर जीवन यापन कर रहे हैं।

3 संपादन वह संरक्षण प्रवृतियां :– आकाशवाणी व दूरदर्शन केंद्रों से प्रसारित होने वाले अधिकतर कार्यक्रम संगीत आधारित होते हैं,जिनक लिए अनेक तकनीकी सहायकों की नियुक्ति की जाती है। जो संगीत के संरक्षण हेतु महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। जिसमें रिकॉर्डिस्ट, उद्घोषक, संपादक, कार्यक्रम निष्पादक इत्यादि विशेष है। यही नहीं इसके साथ–साथ भारत सरकार राष्ट्रीय संगीत नाटक एकेडमी, राज्य संगीत एकेडमी, भाषा एवं कला संस्कृति अकादमी जैसी अनेक संस्थाएं हैं जो अपने अपने यहां अनेक पदों का सृजन करते हैं। जो कला संरक्षण में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। जो डॉक्यूमेंट्री फिल्म, लघु गीतिका, नृत्य नाटिकाए, आदिवासी कला, लोक संगीत व कला के अनेक पहलुओं से संगीत का संरक्षण में योगदान देते हैं।

4 प्रचार व प्रसार की प्रवृतियां :– आज के समय में तकनीकी प्रयोग के कारण प्रचार–प्रसार की प्रवृत्तियों में दिन–प्रतिदिन अनेक बदलाव आते जा रहे हैं जो निम्न प्रकार से हैं

आकाशवाणी व दूरदर्शन :– प्रचार प्रसार की प्रवृत्तियों में आकाशवाणी दूरदर्शन की भूमिका सदैव अग्रणी रही है। आधुनिक समय में अनेक आकाशवाणी दूरदर्शन केंद्र राष्ट्रीय व राज्य स्तर पर पिछले एक दशक से उभर कर सामने आए हैं। जो प्रादेशिक स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक के संगीत कार्यक्रमों द्वारा अपने अपने प्रदेश की कला संस्कृति को राष्ट्रीय मंच पर रखते हैं।

इंटरनेट सर्फिंग :– इंटरनेट के प्रयोग से देश दुनिया के हर कोने में संगीत का प्रचार प्रसार में इंटरनेट सर्फिंग द्वारा संगीत प्राप्त कर रहें हैं। यूट्यूब, फेसबुक जैसी सोशल मीडिया साइट्स पर नये पुराने हर प्रकार के संगीत के संदर्भ में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

डिजिटल पुस्तकें व समाचार पत्रः– आज के समय में डिजिटल पुस्तकें जिन्हें ई–बुक्स कहा जाता है तथा समाचार पत्र प्रचार–प्रसार की नई प्रवृत्ति में मुख्य हैं। जिन का प्रचलन उन पाठकों के संदर्भ में बड़ा है जो ऑनलाइन पुस्तकें व समाचार पत्र पढ़ने के शौकीन हैं।

सेमिनार, वेबीनार व कार्यशाला :– आज के समय में तकनीकी प्रयोग के कारण सेमिनार कार्यशाला ऐसी प्रचार–प्रसार की प्रवृत्तियों में दिन–प्रतिदिन अनेक बदलाव आते जा रहे हैं। आज अनेक सेमिनार ऑनलाइन रुझान बढ़ने के कारण वैबनार का रूप ग्रहण कर चुके हैं तथा कार्यशाला ई–कार्यशाला के रूप में भी इसी संदर्भ में बदलते जा रहे हैं।

5संगीत सह–संबंध आधारित प्रवृतियां :– आधुनिक समय में संगीत मात्र संगीत तक सीमित नहीं रह चुका है। आज संगीत विभिन्न विषयों के साथ व क्षेत्र के साथ अंतर्संबंध स्थापित कर चुका है जिससे जिसके कारण आज अनेकानेक नवीन प्रवृतियां संगीत में पनपी ह। जिनका वर्णन निम्न प्रकार से है।

संगीत एवं योग :– आज संगीत व योग अपने आप में सह–संबंधित हो एक नवीन प्रवृत्ति के रूप में विकयित हो चुका है। जिसमें संगीत का योग के संदर्भ में प्रयोग, प्रयोजन, उपयोगिता अंतर्निहित है। वही योग संगीत के माध्यम से अपने आधारभूत क्रियाओं में इसका व्याख्या कर रहा है।

संगीत एवं मनोविज्ञान :– आज के इस आधुनिकता की भाग दौड़ में संगीत का मनोविज्ञान का प्रभाव का आकलन का मनोविज्ञान के साथ अंतर्संबंध एवं तनाव दूर करने के लिए किसी भी प्रकार से मनोवैज्ञानिक रूप में एक सक्षम साधन के रूप में विकसित हो चुका है।

संगीत चिकित्सा :– आज संगीत चिकित्सा में अनेक प्रयोग चिकित्सीय वैज्ञानिक दृष्टिकोण से संगीत के संदर्भ में हो रहे हैं। ऐसे में संगीत चिकित्सा एक नवीन प्रवत्ति के रूप में उभर कर सामने आई है। जो अपने सनने वाले को संगीत के माध्यम से रोगों से छुटकारा पाने में सहायता प्रदान कर रही हैं। संगीत के द्वारा विभिन्न रोगों का निवारण करने के लिए बहुत से कलाकार कलाकारों ने सराहनीय प्रयास किए हैं। जो मात्र मनुष्य तक ही सीमित नहीं अपितु जीव जंतु कौवा पेड़ पौधे इत्यादि पर इसका प्रयोग कर कई आश्चर्यजनक परिणाम सामने आए हैं। जैसे पेड़ पौधों का शीघ्रता से पढ़ना, गाय भैंस इत्यादि का अधिक दूध देना।

संगीत एवं ज्योतिष :– आज संगीत के समन्वय से भारतीय प्राचीन परंपराओं में भी अनेक रोगों का प्राकृतिक उपचार किया जा रहा है और वह भी बिना किसी साइड इफेक्ट के ज्योतिष का संगीत शास्त्र के संगीत के क्षेत्र में प्रयोग किया जा रहा है। जिसके अंतर्गत व्यक्ति के ग्रह अनुसार उस पर संगीत के प्रभाव का द्वारा समस्याओं का निराकरण ग्रहों का निवारण किया जा रहा है यही नहीं आजकल संगीत के कुछ कैसेट संबंधित राशि विशेष के अनुसार विशिष्ट संगीत लिए बाजार में उपलब्ध है।

संगीत शास्त्रः– पिछले कुछ दशकों से संगीत के क्षेत्र में संगीत से अलग एक अन्य प्रवृत्ति उभर कर सामने आई है जिसे म्यूजिकोलॉजी अर्थात संगीत शास्त्र कहा गया है। इस क्षेत्र में संगीत के केवल शास्त्र पक्ष का ही अध्ययन किया जाता है और उसके ग्रंथों का गुढ़ अध्ययन किया जाता है।

संगीत एवं पत्रकारिता :– संगीत के संदर्भ में संगीत पत्रकारिता एक नवीन प्रवृत्ति है। जिसमें संगीत के संदर्भ में पत्रकारिता का प्रयास किया जाता है। संगीत के कार्यक्रमों की समीक्षा कलाकारों के इंटरव्यू पत्रकारिता के संदर्भ में संगीत की नई प्रवृतियां में सभी का अध्ययन किया जाता है। ताकि वह संगीत के पत्रकार के रूप में सफल हो पाए।

ध्वनि एवं प्रकाश व्यवस्था :– ध्वनि एवं प्रकाश व्यवस्था जिसे अंग्रजी में साउंड लाइट एंड साउंड टेक्नोलॉजी कहा जाता है। आज के समय में एक महत्वपूर्ण यांत्रिक व्यवस्था बन चुकी है जिस पर आजकल लगभग सभी कार्यक्रमों की सफलता और असफलता निर्भर करती है। वह प्रोग्राम व कार्यक्रम चाहे फिर शास्त्रीय संगीत का हो सुगम संगीत का हो लोक संगीत का हो या फ्यूजन म्यूजिक का हो आज इस ध्वनि व्यवस्था ने अपना सिक्का इस प्रकार से जमा लिया है कि कोई भी कार्यक्रम इसके बगैर अधूरा सा लगता है।

विज्ञापन :– उत्पादों के विज्ञापन की गुणवता संगीत के आधार पर उसकी कर्णप्रियता व आकर्षण शक्ति से की जाने लगी है अर्थात किस प्रकार से अपने उत्पाद को कम से कम समय में विज्ञापित करने में संगीत की महत्वपूर्ण भूमिका है जिससे वह अपने उत्पादों के विज्ञापन में

संगीत को चाहे पार्श्व संगीत के रूप में या फिर प्रत्यक्ष रूप में प्रयोग से हो अतः विज्ञापन के अतः विज्ञापन के प्रस्तुतीकरण में संगीत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है जो उसके देखने वाले का तत्काल रूप से प्रभावित करता है।

सारांश वैज्ञानिक आविष्कारों ने समाज के प्रत्येक पल पक्ष वह क्रिया को प्रभावित किया है जिससे संगीत का क्षेत्र भी अछूता नहीं है। फलस्वरुप संगीत के प्रत्येक क्षेत्र में नवीन प्रौद्योगिकी के प्रयोग से विभिन्न विभिन्न प्रवृत्तियों का पदार्पण हुआ है और निरंतर नई से नइ प्रवृतियां पनप रही हैं अतः संगीत के आधुनिक परिवेश में अनेकानेक प्रवृतियां उभर कर सामने आने से संगीत को सुरक्षित, संवर्धित व व्यवसायिक रूप से अपनाने में मदद मिली है। उपरोक्त प्रवृतिया मात्र ही आज के समय में व्यवहारित हैं ऐसा नहीं, अभी तो और भी अनेकानेक ऐसी प्रवृतियां हैं जिनका, जिन सभी का यहां पर वर्णन कर पाना संभव नहीं है क्योंकि यही नवीनता ही इन प्रवृत्तियों की जननी है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 डनेपब ज्तमदके वि जीम 21ेज ब्मदजनतलरू ज्मबीदवसवहल प्दसिनमदबपदह ब्नसजनतम इल ।ददं ठतांम च्वपदजपससपेजपब च्नइसपेीपदह
2 डनेपब ` लवहं ठल ्उप ैपअंदंदकं ए च्नइसपेीमत रू जीम क्पअपदम स्पमि ैवबपमजल
3 संगीत चिकित्सा – महारानी शर्मा, कनिष्क पब्लिकेशन दिल्ली
4 संगीत चिकित्सा – डा0 विजय तारे, पेइगुन बुक्स इडिया